

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा - अष्टम

दिनांक -24 - 11 - 2021

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक - पंकज कुमार

सुप्रभात् बच्चों आज विस्मयादिबोधक चिन्ह के बारे में अध्ययन करेंगे।

विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

विस्मयादिबोधक चिह्न (!) की परिभाषा

विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग वाक्य में हर्ष, विवाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि का बोध कराने के लिए किया जाता है अर्थात् इसका प्रयोग अव्यय शब्द से पहले किया जाता है।

इसका प्रयोग हर्ष, विवाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि का बोध कराने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

जैसे-

- अरे!, आप कौन हो!
- हे राम, यह कैसे हुआ!
- हाय, मुझे देर हो गयी!

जैसा कि आप ऊपर दिए गए वाक्यों में देख सकते हैं, अरे, हे राम, हाय आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों से किसी तीव्र भावना को जताने का प्रयास किया जा रहा है। अतः ये शब्द विस्मयादिबोधक कहलायेंगे।

विस्मयादिबोधक के भेद

विस्मयादिबोधक के कुल 11 भेद होते हैं।

1. शोकबोधक
2. तिरस्कारबोधक
3. स्वीकृतिबोधक
4. विस्मयादिबोधक
5. संबोधनबोधक
6. हर्षबोधक
7. भयबोधक
8. आशीर्वादबोधक
9. अनुमोदनबोधक
10. विदासबोधक
11. विवशताबोधक

शोकबोधक: जहां वाक्य में हे राम!, बाप रे बाप!, ओह!, उफ़!, हां! आदि आते हैं, तो वहां पर शोकबोधक होता है। इन शब्दों से शोक की भावना व्यक्त की जाती है।

उदाहरण: हे राम! ऐसा मेरे साथ ही क्यूँ होता है!

तिरस्कारबोधक: जब वाक्यों में छिः ! , थू-थू , धिक्कार ! , हट ! , धिक् ! , धत ! , चुप ! आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है तो वे शब्द तिरस्कारबोधक कहलाते हैं।

उदाहरण: छिः! कितनी गन्दी जगह है ये!

स्वीकृतिबोधक: जब अच्छा ! , ठीक ! , हाँ ! , जी हाँ ! , बहुत अच्छा ! , जी ! आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है , तो ये स्वीकृतिबोधक के अंतर्गत आते हैं। इनसे हमें स्वीकृति की भावना का बोध होता है। अतः ये स्वीकृतिबोधक कहलाते हैं।

उदाहरण: अच्छा ! फिर ठीक है।

संबोधनबोधक: जब हो !, अजी !, ओ !, रे !, री !, अरे !, अरी !, हैलो !, ऐ! आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है, तो वे संबोधनबोधक कहलाते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करके हम किसी का संबोधन करते हैं।

उदाहरण: अरे! ज़रा रुको तो सही।

हर्षबोधक: जब वाह -वाह !, धन्य !, अति सुन्दर !, अहा !, शाबाश !, ओह ! आदि शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है , तो ये हर्षबोधक कहलाते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करके हम हर्ष की भावना व्यक्त करते हैं।

उदाहरण: वाह ! ये तो किसी अजूबे से कम नहीं।

भयबोधक: जब बाप रे बाप ! , ओह ! , हाय ! , उई माँ ! , त्राहि – त्राहि जैसे शब्दों का प्रयोग वाक्य में किया जाता है, तो ये भयबोधक कहलाते हैं। इन शब्दों से भय या डर की भावना व्यक्त होती है।

उदाहरण: हाय! अब मेरा क्या होगा।

आशीर्वादबोधक: जब किनहीं वाक्यों में जीते रहो!, खुश रहो!, सदा सुखी रहो!, दीर्घायु हो आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है तो ये आशीर्वादबोधक कहलाते हैं। ये तब प्रयोग करते हैं जब बड़े लोग छोटे लोगों को आशीर्वाद देते हैं।

उदाहरण: सदा खुश रहो! बेटा।

विस्मयादिबोधक: जब वाक्य में अरे ! , क्या ! , ओह ! , सच ! , हैं ! , ऐ ! , ओहो ! , वाह ! आदि शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है , तो वे शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं। इन शब्दों से हमें आश्चर्य कि भावना का बोध होता है।

उदाहरण: अरे! तुम कब आये ?